शिक्षा का युग

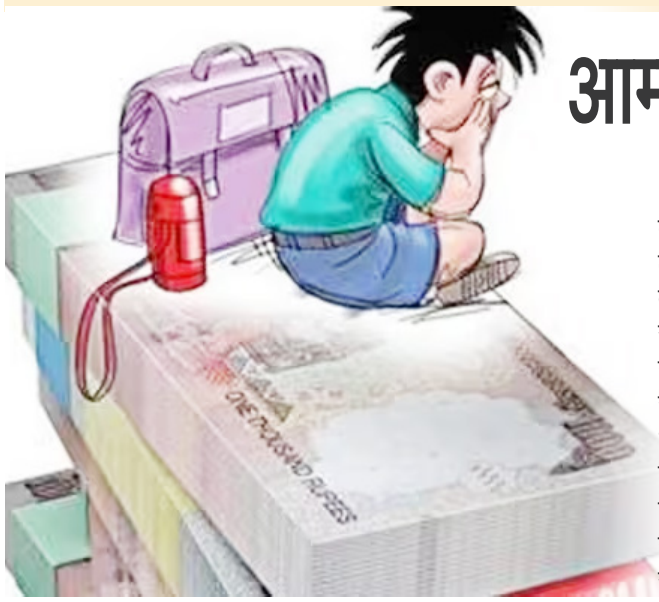
शिक्षा की आवाज़, समाज का विकास

संपादक- मोहम्मद सईद अकबर अली शेख

वर्षः १ । अंकः ०१ । मुंबई, अक्टूबर २०२६ । पृष्ठः ०८ । मूल्यः ₹३ /-

PRGI No. MHHIN/26/A7685

फीस का बोझ बढ़ा, सरकारी स्कूल घटे



आम परिवारों के बच्चों का भविष्य किसके भरोसे?

विशेष संवाददाता/ सुनिल इंगोले

शिक्षा को हर बच्चे का अधिकार माना जाता है, लेकिन जमीनी तस्वीर कई सवाल खड़े करती है। एक ओर निजी स्कूलों की फीस लगातार बढ़ने से अभिभावकों पर आर्थिक बोझ बढ़ रहा है, तो दूसरी ओर सरकारी स्कूलों में विद्यार्थियों की संख्या कम होने के नाम पर स्कूलों के बंद होने या विलय की चर्चाएं सामने आती रहती हैं। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि सामान्य और आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के बच्चों के लिए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का भरोसेमंद विकल्प आखिर बचेगा क्या? निजी स्कूलों में फीस के साथ-साथ प्रवेश शुल्क, विभिन्न गतिविधियों के शुल्क, किताबें, यूनिफॉर्म और अन्य खर्च अभिभावकों के बजट को प्रभावित करते हैं। कई परिवारों के लिए बच्चों की शिक्षा अब केवल पढ़ाई का खर्च नहीं, बल्कि हर वर्ष बढ़ती आर्थिक जिम्मेदारी बनती जा रही है। शिक्षा विभाग द्वारा फीस संबंधी नियम और उनकी निगरानी कितनी प्रभावी है, यह भी गंभीर चर्चा का विषय है। दूसरी ओर सरकारी स्कूलों की स्थिति पर भी सवाल उठते हैं। विद्यार्थियों की घटती संख्या, पर्याप्त सुविधाओं का अभाव, शिक्षकों की उपलब्धता, भवनों की स्थिति और प्रशासनिक स्तर पर होने वाले निर्णयों का सीधा असर सरकारी शिक्षा व्यवस्था पर पड़ता है। यदि किसी सरकारी स्कूल में विद्यार्थी कम हैं तो केवल स्कूल बंद करना या दूसरे स्कूल में विलय करना समाधान माना जा सकता है क्या? इसके पीछे यह भी देखना जरूरी है कि विद्यार्थी कम क्यों हुए और अभिभावकों का सरकारी स्कूलों से भरोसा क्यों कम हुआ। सरकारी स्कूल कमजोर होंगे और निजी शिक्षा महंगी होती जाएगी, तो इसका सबसे ज्यादा असर उस परिवार पर पड़ेगा जो महंगी शिक्षा का खर्च उठाने में सक्षम नहीं है। (शेष पृष्ठ 2 पर)





संपादकीय...

शिक्षक युग : समाज निर्माण की नई दिशा



एम.एस.शेख
संपादक

किसी भी राष्ट्र की वास्तविक प्रगति केवल ऊंची इमारतों, आधुनिक तकनीक और आर्थिक विकास से नहीं मापी जाती। राष्ट्र की असली ताकत उसके शिक्षित, संस्कारित और जिम्मेदार नागरिकों में होती है। इन नागरिकों के निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका शिक्षक की होती है। इसलिए यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि जिस युग में शिक्षा और शिक्षक को समाज के केंद्र में स्थान मिलेगा, वही युग वास्तव में 'शिक्षक युग' कहलाएगा।

शिक्षक केवल पाठ्यक्रम पूरा करने वाला व्यक्ति नहीं होता। वह विद्यार्थी के व्यक्तित्व, विचार और भविष्य को दिशा देने वाला मार्गदर्शक होता है। एक अच्छा शिक्षक विद्यार्थी को केवल किताबों का ज्ञान नहीं देता, बल्कि उसे सही और गलत में अंतर करना, कठिन परिस्थितियों में निर्णय लेना और समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझना भी सिखाता है। डॉक्टर, इंजीनियर, वैज्ञानिक, अधिकारी, उद्यमी और जनप्रतिनिधि–हर क्षेत्र में सफल व्यक्तियों के पीछे किसी न किसी शिक्षक का योगदान अवश्य रहा है।

आज शिक्षा के क्षेत्र में तकनीक तेजी से प्रवेश कर रही है। स्मार्ट क्लास, ऑनलाइन शिक्षा, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने सीखने के तरीके बदल दिए हैं। लेकिन तकनीक शिक्षक का स्थान नहीं ले सकती। मशीन जानकारी दे सकती है, लेकिन विद्यार्थी की क्षमता को पहचानकर उसे प्रेरित करना, उसकी कठिनाइयों को समझना और उसके भीतर आत्मविश्वास पैदा करना शिक्षक ही कर सकता है।

आज आवश्यकता इस बात की है कि शिक्षक को केवल एक कर्मचारी के रूप में नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माता के रूप में देखा जाए। शिक्षकों को बेहतर प्रशिक्षण, आधुनिक संसाधन, सम्मानजनक कार्य वातावरण और अनावश्यक प्रशासनिक बोझ से राहत मिलनी चाहिए। साथ ही शिक्षकों को भी बदलते समय के साथ अपने ज्ञान और शिक्षण पद्धति को लगातार विकसित करना होगा।

शिक्षा का उद्देश्य केवल अच्छे अंक प्राप्त करना नहीं, बल्कि अच्छे इंसान और जिम्मेदार नागरिक तैयार करना होना चाहिए। यदि विद्यालयों में ज्ञान के साथ संस्कार, संवेदनशीलता, वैज्ञानिक सोच, संविधान के मूल्यों और सामाजिक जिम्मेदारी की शिक्षा दी जाए, तो आने वाली पीढ़ी देश को नई दिशा दे सकती है।

आज जब समाज अनेक चुनौतियों से गुजर रहा है, तब शिक्षक की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। शिक्षक मजबूत होगा तो विद्यार्थी मजबूत होगा, विद्यार्थी मजबूत होगा तो समाज मजबूत होगा और समाज मजबूत होगा तो राष्ट्र मजबूत होगा।

इसलिए समय की मांग है कि हम शिक्षा को प्राथमिकता दें और शिक्षक को उसका उचित सम्मान दें। आने वाला भारत केवल तकनीक का भारत नहीं, बल्कि ज्ञान, संस्कार और विवेक का भारत होना चाहिए। इसी सोच के साथ 'शिक्षक युग' को केवल एक विचार नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का संकल्प बनाना होगा।

साहिल वाकोडे की मौत के बाद आईआईटी मुंबई में उठी आवाज, 'आरक्षित वर्ग के छात्रों से भेदभाव क्यों?'

विशेष संवाददाता/ सुनिल इंगोले

मुंबई। आईआईटी मुंबई में बीटेक द्वितीय वर्ष के छात्र साहिल वाकोडे की 18 सितंबर 2026 को हुई आत्महत्या के बाद परिसर में छात्रों का आंदोल न शुरू हो गया है। आंदोलन के जरिए छात्रों ने संस्थान में विद्यार्थियों की मानसिक स्थिति, सामाजिक भेदभाव और आरक्षित वर्ग के छात्रों के साथ कथित व्यवहार को लेकर कई गंभीर सवाल उठाए हैं। साहिल वाकोडे के माता-पिता ने आरोप लगाया है कि उनके बेटे को कथित तौर पर जातिसूचक गालियां दी जाती थीं और उसे परेशान किया जाता था। इस संबंध में पुलिस में शिकायत भी दर्ज कराई गई है। हालांकि, इन आरोपों की पुष्टि जांच पूरी होने के बाद ही हो सकेगी। पुलिस मामल ` की जांच कर रही है। आंदोलन कर रहे छात्रों का आरोप है कि आईआईटी में आरक्षित वर्ग से आने वाले विद्यार्थियों को कई स्तरों पर भेदभाव का सामना करना पड़ता है। छात्रों का कहना है कि साहिल की मौत को केवल एक व्यक्तिगत घटना के तौर पर नहीं देखा जाना चाहिए, बल्कि इसके पीछे किसी प्रकार का सामाजिक या संस्थागत दबाव था तो उसकी भी निष्पक्ष जांच होनी चाहिए। साहिल की मौत के बाद उठे सवाल अब आईआईटी जैसे प्रतिष्ठित संस्थानों में समानता, सुरक्षित शैक्षणिक माहौल और विद्यार्थियों की शिकायतों के निवारण



की व्यवस्था तक पहुंच गए हैं। छात्रों की मांग है कि मामल ` की पारदर्शी जांच हो और यदि किसी स्तर पर भेदभाव या उत्पीड़न के आरोप सही पाए जाते हैं, तो जिम्मेदारी तय की जाए। साहिल वाकोडे की मौत ने एक बार फिर यह सवाल सामने ला दिया है कि देश के शीर्ष शिक्षण संस्थानों में दाखिले के बाद क्या हर विद्यार्थी को बिना किसी सामाजिक या जातिगत भेदभाव के समान और सुरक्षित वातावरण मिल रहा है?

Outdoor Media partner BRIGHT	Travel partner ursmartspoc +91 9742 714 427 www.ursmartspoc.com	Lightning Partner SURYA	PR Partner TELLY Films	Creativity partner VectorArt	Channel partner/ news partner FAC NEWS	Supported Partner NISH NISHCON REALTY PVT.LTD.	Social media partner BrandVibez
Telecast partner STAR	Luxury hotel partner BYLAND INTERNATIONAL HOTELS	Official PR & Marketing Partner MCA Worldwide	Gifting partner AL ZIM PERFUMES	Education Partner शिक्षा का युग	Outdoor Media partner BRIGHT	Travel partner ursmartspoc +91 9742 714 427 www.ursmartspoc.com	Lightning Partner SURYA
Outdoor Media partner BRIGHT	Travel partner ursmartspoc +91 9742 714 427 www.ursmartspoc.com	Lightning Partner SURYA	PR Partner TELLY Films	Creativity partner VectorArt	Channel partner/ news partner FAC NEWS	Supported Partner NISH NISHCON REALTY PVT.LTD.	Social media partner BrandVibez
Telecast partner STAR	Luxury hotel partner BYLAND INTERNATIONAL HOTELS	Official PR & Marketing Partner MCA Worldwide	Gifting partner AL ZIM PERFUMES	Education Partner शिक्षा का युग	Outdoor Media partner BRIGHT	Travel partner ursmartspoc +91 9742 714 427 www.ursmartspoc.com	Lightning Partner SURYA
Outdoor Media partner BRIGHT	Travel partner ursmartspoc +91 9742 714 427 www.ursmartspoc.com	Lightning Partner SURYA	PR Partner TELLY Films	Creativity partner VectorArt	Channel partner/ news partner FAC NEWS	Supported Partner NISH NISHCON REALTY PVT.LTD.	Social media partner BrandVibez
Telecast partner STAR	Luxury hotel partner BYLAND INTERNATIONAL HOTELS	Official PR & Marketing Partner MCA Worldwide	Gifting partner AL ZIM PERFUMES	Education Partner शिक्षा का युग	Outdoor Media partner BRIGHT	Travel partner ursmartspoc +91 9742 714 427 www.ursmartspoc.com	Lightning Partner SURYA
Outdoor Media partner BRIGHT	Travel partner ursmartspoc +91 9742 714 427 www.ursmartspoc.com	Lightning Partner SURYA	PR Partner TELLY Films	Creativity partner VectorArt	Channel partner/ news partner FAC NEWS	Supported Partner NISH NISHCON REALTY PVT.LTD.	Social media partner BrandVibez

// पृष्ठ १ का शेष //

फीस का बोझ....

ऐसे में शिक्षा व्यवस्था में असमानता बढ़ने की आशंका को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। सरकार और शिक्षा विभाग के सामने चुनौती केवल स्कूलों की संख्या बनाए रखना नहीं, बल्कि सरकारी स्कूलों को इतना सक्षम और गुणवत्तापूर्ण बनाना है कि अभिभावकों को मजबूरी में निजी स्कूलों की ओर न देखना पड़े। इसके लिए शिक्षक, बुनियादी सुविधाएं, डिजिटल संसाधन, स्वच्छ वातावरण और गुणवत्तापूर्ण शिक्षण व्यवस्था पर समान रूप से ध्यान देना जरूरी है। आज जरूरत इस बात की है कि शिक्षा विभाग केवल आंकड़ों में स्कूलों की संख्या, विद्यार्थियों की संख्या और योजनाओं की प्रगति न देखे, बल्कि अभिभावक और विद्यार्थी क्या झेल रहे हैं, यह भी समझे। बढ़ती फीस पर प्रभावी निगरानी और सरकारी स्कूलों को मजबूत करने की दिशा में ठोस कदम–इन दोनों मोर्चों पर सरकार की जवाबदेही तय होना जरूरी है। आखिर सवाल केवल स्कूल का नहीं है, सवाल उस बच्चे के भविष्य का है, जिसके परिवार के पास महंगी शिक्षा खरीदने की क्षमता नहीं है।



प्राथमिक शिक्षकों के लिए TET अनिवार्यता पर फिर घमासान,

सुप्रीम कोर्ट में पहुंचा मामला; लाखों शिक्षकों की नजर अगली सुनवाई पर

नई दिल्ली। देशभर के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों के लिए शिक्षक पात्रता परीक्षा यानी TET (Teacher Eligibility Test) की अनिवार्यता का मामला एक बार फिर सुप्रीम कोर्ट के सामने है। TET को लेकर पहले से जारी कानूनी विवाद अब नए चरण में पहुंच गया है। जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश समेत कई राज्यों के शिक्षक और उनके संगठन इस मुद्दे पर न्यायिक लड़ाई लड़ रहे हैं। मामले में शिक्षकों की सबसे बड़ी आपत्ति उन शिक्षकों को लेकर है, जो RTE यानी शिक्षा का अधिकार अधिनियम लागू होने से पहले से ही सेवा में हैं। शिक्षक संगठनों का तर्क है कि जिन शिक्षकों की नियुक्ति उस समय लागू नियमों और निर्धारित पात्रता के आधार पर हुई थी, उन्हें बाद में TET पास करने की अनिवार्य शर्त के दायरे में लाना उचित नहीं है। संगठनों का कहना है कि इससे लंबे समय से सेवा दे रहे शिक्षकों की नौकरी और सेवा संबंधी अधिकारों पर असर पड़ सकता है। दरअसल, TET की अनिवार्यता को लेकर अदालत में पहले भी मामला पहुंच चुका है। सरकार की ओर से दायर समीक्षा याचिका को 29 मई 2026 को खारिज किए जाने के बाद शिक्षकों और उनके संगठनों ने मामले को आगे बढ़ाने का रास्ता अपनाया। अब उनकी नजर सुप्रीम कोर्ट में होने वाली आगामी सुनवाई पर है। शिक्षक संगठनों की ओर से यह भी तर्क दिया जा रहा है कि RTE कानून के प्रावधानों को लागू करने के दौरान पहले से कार्यरत और बाद में नियुक्त शिक्षकों के बीच अंतर को ध्यान में रखा जाना चाहिए। उनका कहना है कि कानून लागू होने से पहले नियुक्त हुए शिक्षकों के लिए बाद में TET पास करने की शर्त लगाना सेवा की मौजूदा परिस्थितियों में बदलाव जैसा है। इसी आधार पर पुराने शिक्षकों को TET की अनिवार्यता से राहत देने की मांग उठ रही है।



मामला केवल TET परीक्षा तक सीमित नहीं

शिक्षक संगठनों का कहना है कि यह मामला केवल एक परीक्षा पास करने की शर्त का नहीं है, बल्कि इससे हजारों-लाखों शिक्षकों की सेवा, भविष्य और नौकरी की सुरक्षा जुड़ी हुई है। संगठनों ने सेवा अधिकारों और संविधान में दिए गए अधिकारों का हवाला देते हुए अदालत के समक्ष अपनी बात रखी है। उनका कहना है कि लंबे समय से सरकारी स्कूलों में पढ़ा रहे शिक्षकों की स्थिति को अलग से देखा जाना चाहिए। वहीं, ऊंऊं को शिक्षक पात्रता सुनिश्चित करने की प्रक्रिया के रूप में देखा जाता है। इसी वजह से अब मूल सवाल यह है कि पहले से सेवा में मौजूद शिक्षकों पर इस पात्रता परीक्षा की अनिवार्यता किस सीमा तक लागू होगी और क्या उन्हें इससे किसी प्रकार की छूट मिल सकती है।

अगली सुनवाई पर टिकी नजरें

मामले में अब शिक्षकों, शिक्षक संगठनों और सरकार की नजर सुप्रीम कोर्ट की अगली सुनवाई पर है। अदालत में होने वाली आगे की कार्यवाही से यह स्पष्ट हो सकता है कि TET की अनिवार्यता को लेकर पहले से सेवा में मौजूद शिक्षकों के लिए क्या व्यवस्था लागू होगी। फिलहाल देशभर के शिक्षक संगठनों की सक्रियता बढ़ गई है। जम्मू-कश्मीर, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश के शिक्षक संगठन इस मुद्दे को लेकर अपनी मांगें अदालत तक पहुंचा चुके हैं। ऐसे में सुप्रीम कोर्ट का अगला रुख उन शिक्षकों के लिए बेहद महत्वपूर्ण माना जा रहा है, जिनकी नियुक्ति TET की मौजूदा।अनिवार्यता से पहले हुई थी। आने वाले दिनों में अदालत की सुनवाई और संभावित दिशा-निर्देश से यह तस्वीर साफ होगी कि पुराने शिक्षकों के लिए TET अनिवार्यता में कोई राहत या अलग व्यवस्था बनती है या नहीं।













प्राचार्य अजय कॉल सर : अध्यक्ष- एकता मंच





Shri Subhash Sahgal — Director



Simran Ahuja— Ms. India, TV Actress/Celebrity



Hon. Shri Haji Arfat Shaikh — Ex. President - Maharashtra State Minoirties Commission




शिक्षा का युग
शिक्षा की आवाज़, समाज का विकास
समाचार पत्र के
प्रथम प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
Hussain Mansuri - Social worker


शिक्षा का युग
शिक्षा की आवाज़, समाज का विकास
समाचार पत्र के
प्रथम प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
Parvez Shaikh- General Secretary,
BJP Minority Morcha, Mumbai


शिक्षा का युग
शिक्षा की आवाज, समाज का विकास
नई सोच...
बेहतर समाज....
उज्जवल भविष्य...
समाचार पत्र के
प्रथम प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
Ahsaan Qureshi- Comedian & Actor


शिक्षा का युग
शिक्षा की आवाज़, समाज का विकास
समाचार पत्र के
प्रथम प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
Bevan Hogg
Founder - CEO . URSmartspoc


शिक्षा का युग
शिक्षा की आवाज, समाज का विकास
नई सोच...
बेहतर समाज....
उज्जवल भविष्य...
समाचार पत्र के
प्रथम प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामना
Charu Gupta- Co-Founder - COO URSmartspoc




शिक्षा का युग
शिक्षा की आवाज़, समाज का विकास
समाचार पत्र के
प्रथम प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
Abhijit Rane: BJP Mumbai secretery


शिक्षा का युग
शिक्षा की आवाज़, समाज का विकास
समाचार पत्र के
प्रथम प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
Milind Gunaji- Film Actor


शिक्षा का युग
शिक्षा की आवाज, समाज का विकास
नई सोच...
बेहतर समाज....
उज्जवल भविष्य...
समाचार पत्र के
प्रथम प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
NADIR ALI -
Director-7 star cabel network PVT


शिक्षा का युग
शिक्षा की आवाज़, समाज का विकास
समाचार पत्र के
प्रथम प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
Vivek Tawde
President, Sanskar Bharti, Mira Bhayandar


शिक्षा का युग
शिक्षा की आवाज, समाज का विकास
नई सोच...
बेहतर समाज....
उज्जवल भविष्य...
समाचार पत्र के
प्रथम प्रकाशन पर
हार्दिक शुभकामनाएं
विक्रम सेन
फाईट अगेंस्ट क्रिमिनल- कार्यकारी संपादक
राष्ट्रीय अध्यक्ष- भारतीय पत्रकार संघ



शिक्षा से सफलता, सफलता से समाज-सेवा

विद्या ददाति विनयं, विनयाद् याति पात्रताम्। पात्रत्वाद् धनमाप्नोति, धनाद् धर्मं ततः सुखम् – हितोपदेश

शिक्षा केवल उपाधि पाने का साधन नहीं, बल्कि जीवन को दिशा देने वाली शक्ति है। उपाधि उसका आरंभ है; वास्तविक फल तब मिलता है, जब सीखे हुए ज्ञान को निष्ठा से कर्म और आचरण में उतारा जाए। ऐसी शिक्षा व्यक्ति को सफल बनाती है, और वही सफलता समाज का संबल बनती है।

शिक्षा का सही अर्थः ज्ञान, कौशल और संस्कार

सच्ची शिक्षा के तीन आयाम हैं – ज्ञान, कौशल और संस्कार। ज्ञान पुस्तकों और कक्षाओं से मिलता है, कौशल उसके निरंतर अभ्यास से निखरता है, और संस्कार उसे सही दिशा देते हैं। तीनों का संतुलन ही शिक्षा को पूर्ण बनाता है।

शिक्षा का अनुसरण एक सतत प्रक्रिया है। उपाधि के बाद भी सीखते रहना, सीखे हुए को वास्तविक समस्याओं पर लागू करना और हर कार्य में ईमानदारी बनाए रखना – यही शिक्षा को जीवित रखता है। जो शिक्षा केवल प्रमाणपत्र तक सीमित रह जाए, वह न व्यक्ति का भला करती है, न समाज का।

शिक्षा का अनुसरण और स्वयं की सफलता

अधिवक्ता अरिहंत कुमार नाहर की यात्रा इसका सजीव उदाहरण है। उन्होंने यूनिवर्सिटी ऑफ़ पेट्रोलियम एंड एनर्जी स्टडीज़ (UPES), देहरादून से ऊर्जा कानून में विशेषज्ञता के साथ बी.ए. एलएल.बी. (ऑनर्स) की उपाधि प्राप्त की (2010-2015)। उनके लिए उपाधि मंज़िल नहीं, सीखने की अगली सीढ़ी थी। पुणे में माइंडक्रेस्ट इंक. के साथ रिसर्च एसोसिएट के रूप में उन्होंने शोध को पेशेवर अनुशासन से जोड़ा। 2016 से मध्यप्रदेश के पूर्व महाधिवक्ता, वरिष्ठ अधिवक्ता श्री आनंद मोहन माथुर के सान्निध्य में उन्होंने वकालत की व्यावहारिक शिक्षा ली। सर्वोच्च न्यायालय और विभिन्न उच्च न्यायालयों में वरिष्ठ अधिवक्ताओं के साथ कार्य करते हुए उन्होंने कक्षा के ज्ञान को न्यायालय के अनुभव में बदला।



इसी निरंतर सीखने का फल है कि अक्टूबर 2020 में उन्होंने इंदौर में अपना स्वतंत्र विधि कार्यालय, अरिहंत नाहर एंड एसोसिएट्स, स्थापित किया। आज वे मध्यप्रदेश शासन, भारतीय स्टेट बैंक और एक्ज़िम बैंक सहित कई संस्थानों के पैनल अधिवक्ता हैं। यह सफलता किसी संयोग का नहीं, शिक्षा के निष्ठापूर्ण अनुसरण का परिणाम है।

शिक्षित पेशेवर और समाज की सफलता

शिक्षा जब पेशे में उतरती है, तो उसका लाभ व्यक्ति तक सीमित नहीं रहता, पूरे समाज तक पहुँचता है। एक अधिवक्ता के रूप में यह योगदान कई रूपों में दिखता हैः

न्याय तक पहुँचः शिक्षित अधिवक्ता आम नागरिक और न्याय-व्यवस्था के बीच सेतु है। भू-अर्जन मुआवज़े से लेकर सिविल-आपराधिक मुकदमों तक, हर पक्षकार को विधि-सम्मत न्याय दिलाना उसका धर्म है।

जनता के धन की सुरक्षाः बैंकों के बकाया ऋण की वसूली वास्तव में आम जमाकर्ताओं की गाढ़ी कमाई की रक्षा है, जो राष्ट्र की आर्थिक सुदृढ़ता का आधार है।

संवैधानिक मूल्यों का संरक्षणः रिट, सेवा और निर्वाचन याचिकाओं के माध्यम से नागरिक अधिकार और प्रशासन की जवाबदेही सुनिश्चित होती है।

बदलते समय की ज़रूरतेंः साइबर धोखाधड़ी जैसे नए अपराधों से निपटना निरंतर अद्यतन शिक्षा से ही संभव है।

ज्ञान का हस्तांतरणः युवा अधिवक्ताओं को मार्गदर्शन और अवसर देकर शिक्षा को अगली पीढ़ी तक पहुँचाना, शिक्षा का सबसे बड़ा सामाजिक प्रतिफल है।

इस प्रकार एक व्यक्ति की शिक्षा, उसके पेशे के माध्यम से, अनेक लोगों के जीवन में न्याय, सुरक्षा और अवसर बनकर लौटती है।

निष्कर्षः शिक्षा की सच्ची सार्थकता

हितोपदेश का श्लोक यही क्रम बताता हैः विद्या से विनय, विनय से पात्रता, पात्रता से धन, धन से धर्म – अर्थात् समाज के प्रति कर्तव्य – और अंततः सुख। यह चक्र तभी पूरा होता है, जब शिक्षा का ईमानदारी से अनुसरण किया जाए। युवाओं के लिए संदेश स्पष्ट हैः उपाधि को मंज़िल नहीं, यात्रा का आरंभ मानें। निरंतर सीखें, सीखे हुए को आचरण में उतारें और अपनी सफलता का एक अंश समाज को लौटाएँ। यही शिक्षा की सच्ची सार्थकता है – स्वयं की सफलता और समाज की समृद्धि।





मालिक, मुद्रक व प्रकाशक मोहम्मद सईद अकबर अली शेख द्वारा सोमानी प्रिंटिंग प्रेस - यूनिट नं. 04, ग्राउंड फ्लोर, एन. के. इंडस्ट्रियल एस्टेट, आरे रोड के पास, प्रवासी इंडस्ट्रियल एस्टेट के निकट, गेट नं. 2, गोरेगांव (पूर्व), मुंबई उपनगर, महाराष्ट्र - 400063। से मुद्रित एवं 705 / बी विंग, क्रिस्टल प्लाज़ा, इनफिनिटी मॉल के सामने, लिंक रोड, अंधेरी पश्चिम, मुंबई उपनगर, महाराष्ट्र - 400053 से प्रकाशित. संपादक- मोहम्मद सईद अकबर अली शेख. PRGI No. MHHIN/26/A7685. मोबाईल नं.-9930026943